श्री कृष्ण: एक आदर्श चरित्र

चलिए जानते है कृष्ण जी का वास्तविक चरित्र

VEDVIJYAN

कृष्ण जी का परिचय आरम्भ करते है सभापर्व 40।19,20 के एक छोटे से श्लोक से:

नृणां लोके हि कोऽन्यो ऽस्ति विशिष्टः केशवादृते।
दानं दाक्ष्यं श्रुतेशोर्यं ह्री कीर्ति बुद्धिरूत्तमा
सन्नतीः श्रृधृर्तिस्तुष्टिः पुष्टिश्च नियताच्युते।

इस समय मनुष्य लोक में श्री कृष्ण से बढ़कर कौन है?

दान, दक्षता, वेदादि शास्त्रों का श्रवण, शूर वीरता, बुरे कार्यों में लज्जा, कीर्ति, उत्तम बुद्धि, नम्रता, शोभा, ऐश्वर्य, धैर्य, कर्तव्य मार्ग से विचलित न होना। ये सभी गुण विद्यमान है प्रभु कृष्ण में।

VEDVIJYAN

1.आपको तो यह ज्ञात ही होगा कि बचपन से ही कृष्ण को कंस के भेजे शत्रुओं का सामना करना पड़ा। फिर कंस को मारने के बाद कंस का ससुर जरासंध कृष्ण जी को मारने पे तुल गया। इतने संघर्ष में उन्हें कहां रास रचाने, नाचने, गाने का वक्त था।

2.लाला लाजपत राय अपनी पुस्तक "योगीराज कृष्ण" के अध्याय 6 में कहते है कि कृष्ण बलराम 12 वर्ष की आयु में मथुरा चले गए गए फिर क्या 12 वर्ष का बालक रास रचा सकता है क्या?

VEDVIJYAN

3.महाभारत सौप्तिक पर्व 12/30-31 में कृष्ण कहते है:
ब्रह्मचर्य महाद्धोरं चीर्त्वा द्वादश्वर्षिकम्।हिमव्तपार्श्वमास्थाय यो मया तपसार्जितः।। समान व्रत चारिण्यां रुक्मण्यां योऽन्वजायत।सन्तकुमारस्तेजस्वी प्रद्युम्नो मे सुतः।।
अर्थात: मैंने 12 वर्ष ब्रह्मचर्य का पालन कर हिमालय कि कन्दारों में रहकर बड़ी तपस्या के द्वारा जिसे प्राप्त किया था, मेरे समान व्रत का पालन करने वाली रुक्मिणी देवी के गर्भ से जिसका जन्म हुआ है, जिसके रूप में साक्षात् तेजस्वी सनत्कुमार ने ही मेरे यंहा जन्म लिया है, वह प्रद्युमन मेरा प्रिय पुत्र है |(मेरा यह सुदर्शन चक्र तो कभी उसने भी नहीं माँगा)
इस श्लोक को पढ़कर आप समझ गए होंगे कि कृष्ण जी का चरित्र कैसा था|

VEDVIJYAN

4.भीष्म पितामह क्या कहते है कृष्ण जी के बारे में: राजसूय यज्ञ में सबसे बलवान, बुद्धिमान, श्रेष्ठ व्यक्ति की पूजा(सत्कार) होनी थी| तब भीष्म ने कृष्ण को ही सबसे बलवान, पराक्रमी और श्रेष्ठ बताया| क्या किसी रास रचाने वाले को कोई ब्रह्मचारी श्रेष्ठ बता सकता है|

5.यज्ञ में शिशुपाल को क्रोध आया क्योंकि वह चाहता था कि वंहा उसका सत्कार हो| तो कृष्ण जी को अपशब्द कहने लगा| पर कमाल कि बात तो यह है कि उसने कृष्ण जी को रास रचाने वाला, लम्पट(स्त्रीओं में गमन करने वाला) नहीं कहा | इससे सिद्ध होता है कृष्ण जी वैसे थे ही नहीं| बल्कि शिशुपाल को कृष्ण जी की कोई गलती मिली ही नहीं जो वो उन्हें राजसूय यज्ञ में बोल सके।
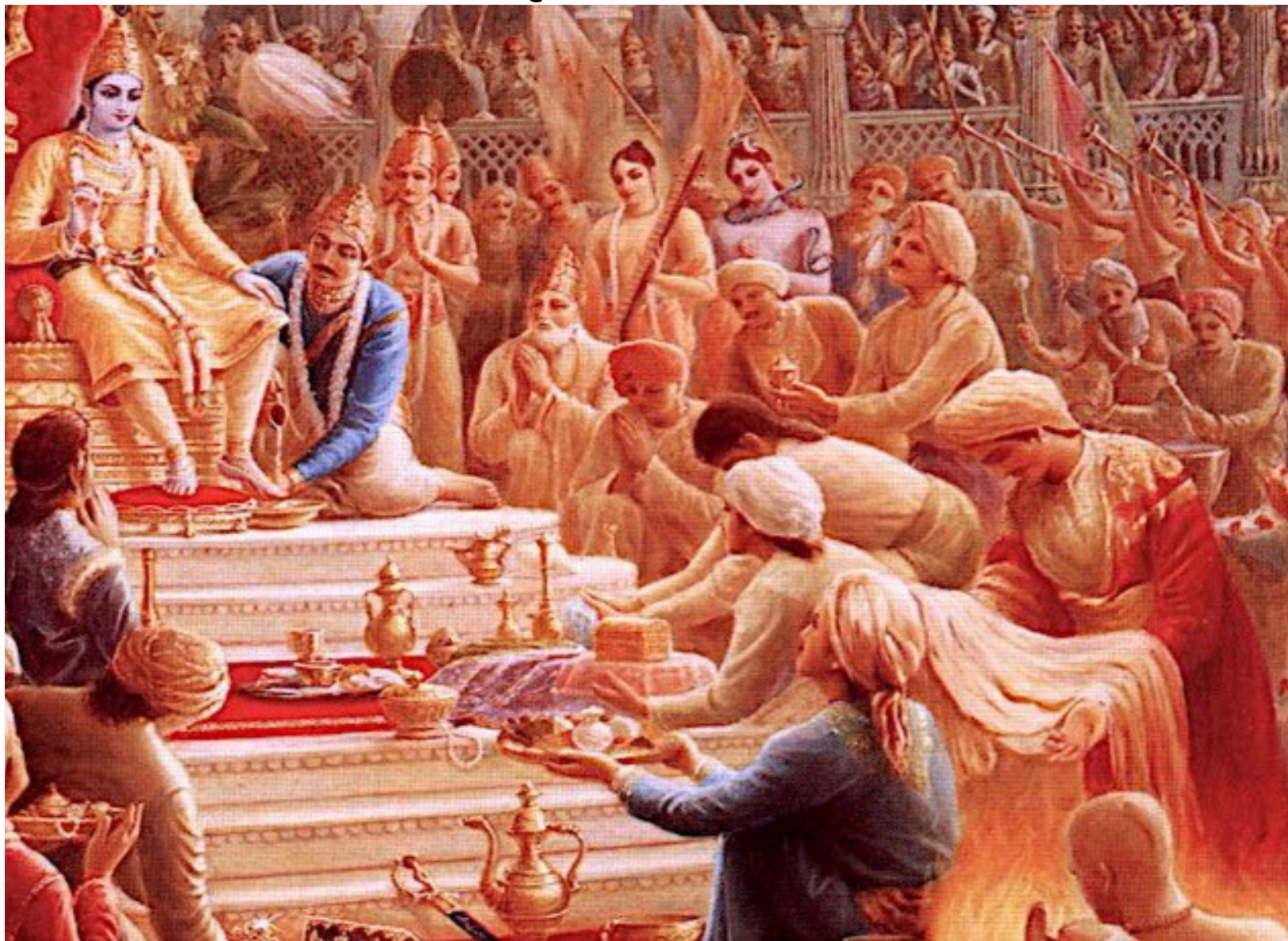
6.जैसा कि मैंने आपको बताया कंस का सरुर जरासंध कृष्ण जी को मारना चाहता था | इधर राजसूय यज्ञ की तैयारी चल रही थी उधर कृष्ण, भीम और युधिष्ठिर के साथ वेशभूषा बदलकर जरासंध के राज्य में जा पहुंचे| जरासंध को शक हुआ तो कृष्ण से परिचय पूछा और कहा क्या तू ही कृष्ण है| तब कृष्ण कहते है : हा मैं ही कृष्ण हूँ और मेरे साथ ये दो भीम व युधिष्ठिर है |
और उसी के राज्य में जरासंध को चुनोती दे देतें है| जरा सोचो कितने निर्भय, पराक्रमी और बलवान होंगे हमारे कृष्ण | ***VEDVIJYAN***

7. बंकिम चन्द्र चटोपाध्याय जी (वन्दे मातरम के रचियता) के अनुसार कृष्ण अपने सत्कर्मो के कारण ही अपने समय के महान राजनीतिज्ञ बने | उन जैसा महापुरुष अन्यत्र कहीं और उनके अलावा कौन हुआ?वे आगे कहते है बाल अवस्था से लेकर निर्वाण पर्यंत धर्म के कार्य किये ताकि सबको उनसे प्रेरणा मिले|वे महान नीतिज्ञ धर्म के विषय के महान धर्मोप्देष्टा(धर्म का उपदेश करने वाले) बने|

8.कृष्ण जी ने अपने को संबोधित कर एक बात कही:(भीष्मपर्व 43/60)

"यतो धर्मस्ततः कृष्णो यतः कृष्णस्तातो जयः"

जहाँ कृष्ण है वहां धर्म है जहाँ धर्म है वहां कृष्ण है|

अब आप ही सोच लो कि क्या कृष्णा अपने जीवन में व्यभिचार जैसा कलकिंत कार्य कर सकते है पर देखो विडंबना इन गपोड़ पुराणों ने कैसे हमारे कृष्णा जी का चरित्र हनन किया।

9.जरा देखिये कृष्ण जी के लिए धर्मात्मा संजय जी क्या कहते है:(भीष्मपर्व 18/78)
“यत्रयोगेश्वर कृष्णो यत्रप्रार्थो धनुर्धरः| तत्र श्री विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम|“
जहाँ योग के ईश्वर कृष्ण और धनुर्धारी अर्जुन है वहीँ श्री है वहीँ विजय है अधिक क्या कहे वहीँ ऐश्वर्य और ध्रुवनीति है|

10.बाल्यकाल से ही देखिये कृष्ण जी के दृढविचार है, स्वस्थ मन है, पुष्ट शरीर है| ब्रह्मचारी में जो विशेषता मिलनी चाहिए वह सब कृष्ण में है|

11.कृष्ण जी को वेद वेदांङ्ग का भी पांडित्य था| वज्र जैसे शरीर के साथ साथ कृष्ण जी युद्धनीति व कई शास्त्रों के भी पंडित थे|

12.गपोड़ी पदम् पुराण उत्तर खंड अध्याय 245 के अनुसार गोपियाँ और कोई नहीं बल्कि वह ऋषि मुनि थे जन्हें श्री राम जी को देख भोग की इच्छा हुई तो राम ने कृष्ण अवतार लिया|मुर्खता तो देखो इनकी| जो लोग ऐसी बातों को मान भी लेते है उनका तो कहना ही क्या|

13.संस्कृत के एक रचनाकार सुभाषित रत्नाकर ने इन पुराण धारी पोपों के लिए एक बात कही कि इन पौराणिकों में व्यभिचार का बहुत दोष होता है इसीलिए ये भी व्यभिचार से पैदा हुए और इनकी संताने भी व्यभिचार से ही पैदा होंगी|

VEDVIJYAN

14.दयानन्द जी सत्यार्थ प्रकाश में कृष्ण जी के बारे में लिखते है कि देखो महाभारत कृष्ण जी का चरित्र कितना उत्तम है एक दम आप्त पुरुषों के समान।यदि ये पुराण ना होते तो कृष्ण जी की आज इतनी निन्दा न होती।

मुर्खता तो देखिये आज कल के लोगो कि महायोगेश्वर, नीतिज्ञ, पराक्रमी, और उपकुर्वाण ब्रह्मचारी कृष्णा को जो लोग भगवान् मानते है, वे ही लोग उन्हें गोपियों से व्यभिचार करने वाला साबित कर देते है|

नीतिज्ञ, योगेश्वर, ब्रह्मचारी कृष्ण महाराज की जय

@VEDVIJYAN

||समाप्तम्||

VEDVIJYAN

GURUKUL OF SANSKRUTI

FOLLOW VEDVIJYAN

www.instagram.com/vedvijyan